P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4* (Part-1) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

'मैयादास की माड़ी' औपनिवेशिक समाज

मंजुला शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
टी.डी.बी. कॉलेज,
रानीगंज

सारांश

परिवर्तन प्राकृतिक नियम है, झरते हुए पुरातन के बीच नये युग की सुगबुगाहट। मानव–जीवन भी कुछ इसी प्रकार का है जो नये और पुराने के बीच संघर्ष करता हुआ बदलाव को स्वीकार करता है। प्राचीन परम्पराएं, रीति–रिवाज, जीवन मूल्य अपनी उपयोगिता खोने लगते हैं और उनके स्थान पर नये मूल्य आते हैं, मानसिकता बदलती है, समाज बदलता है। प्रगतिशील रचनाकार अपनी रचनाओं में युग परिवर्तन का व्यापक समर्थन करते हुए बदलाव में विश्वास करते हैं तथा इनके परिवर्तन समर्थक दृष्टि का सामाजिक विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की स्थापना एक बड़ी सच्चाई है। और भीष्म साहनी ने भारतीय इतिहास में हो रहे परिवर्तन को बड़ी गम्भीरता से देखा था। इनका ''मैयादास की माड़ी'' उपन्यास सिक्ख अमलदारी के उखड़ने और ब्रिटिश साम्राज्यशाही के पैर फैलाने की कथा कहती है। इसमें कस्बई कथाभूमि के माध्यम से भारतीय इतिहास के इस विशेष परिवर्तन के चित्रण है।

भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में कस्बई जीवन के परिवर्तन को रेखांकित किया है। बदलते हुए परिवेश से स्वयं को जोड़ने के लिए लोग प्रस्तुत नहीं रहते हैं। कुछ लोग किसी तरह के समझौते के लिए तैयार नहीं थे तो कुछ अपनी भूमिका तलाश रहे थे और कुछ ने नये माहौल में पूरी तरह से अपने आप को आत्मसात कर लिया था। यह उपन्यास समय की सच्चाईयों के साथ युग विशेष को प्रतिबिम्बित करता है। यहॉ उपन्यासकार की रचनात्मक क्षमता और वैचारिक दृष्टि का समन्वित रूप दिखाई पड़ता है।

मुख्य शब्दः परिवर्तन, मनुष्य, संघर्ष, मानसिकता, सामाजिक विकास।

प्रस्तावना

प्रगतिशील साहित्यकार भीष्म साहनी प्राचीन के स्थान पर नवीन के निर्माण की कल्पना करते हैं। वे सभी प्रकार की विषमता का अन्त कर, नये समाज की संरचना करना चाहते हैं। बदलते परिवेश को आत्मसात करनेवाले भीष्म साहनी का उपन्यास ''मैयादास की माड़ी'' उनके अन्य उपन्यासों से भिन्न पंजाब प्रदेश के दीवानी साम्राज्य की गतिविधियों का आंकलन करता है। यह मानवीय विकास की गाथा है। लेखक ने इसमें माड़ी की लगभग सौ वर्षों के इतिहास के साथ समाज की बदलती दशा का भी विश्लेषण किया है। माड़ी का वहीं इतिहास स्वयं भारत का इतिहास भी है। डॉ0 सुरेश बाबर के अनुसार ''भीष्म साहनी ने प्रस्तुत उपन्यास में चार पीढ़ियों का इतिहास प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन सामाजिक स्थितियों, राजनीतिक परिस्थितियों और उनके प्रभावों के चित्रण के साथ ही उच्च मध्यवर्ग की बदलती मानसिकता का भी मार्मिक चित्रण किया है।[1]'' मैयादास की माड़ी की रचना पर सत्यप्रकाश मिश्र का विचार है कि ''लेखक अत्यन्त कौशल के साथ पंजाब के जीवन्त परिवेश के भीतर जिन्दगी की धड़कन, बेवसी, गतिशीलता और स्थिरता आदि को ऐतिहासिक तथ्यों, लोकगीतों और किस्से–कहानियों आदि में समोकर अपने उपन्यास की दुनिया रचता है और रचते समय इससे अवगत रहता है कि यह संसार अनेक संसार के समान एक संसार है।[2] तीन खण्डों एवं 15 भागों में विभाजित यह उपन्यास तत्कालीन कालखण्ड एवं परिवेश का जीवन्त दस्तावेज है। आशुतोष कुमार के शब्दों में ''मैयादास की माड़ी'' एक पूर्व औपनिवेशिक हिन्दुस्तानी कस्बे के एक औपनिवेशिक शहर में धीरे–धीरे बदलने की विडम्बनापूर्ण कहानी है।''[3] ब्रिटिश सत्ता पंजाब को धीरे–धीरे हथियाती है। वह सभी जमीदारों से उनकी जमीन लेकर बदले में एक–दो गॉव की दीवानी भेंट करते हैं। इस उपन्यास के सन्दर्भ में डॉ0 कृष्णा पटेल लिखते हैं ''भीष्म जी ने सामंती शक्तियों के विरूद्ध जन–चेतना के उभार, अंग्रेजी शासन में पैदा हुए धनलोलुप–पदलोलुप वर्ग की उच्छृंखलता, चाटुकारिता और संवेदनशून्यता एवं शोषण पर आधारित व्यवस्था को वर्णन के केन्द्र में रखा है।[4]''

घटनायें माड़ी के भीतर घटते हुए भी बाहरी दुनिया से पूरी तरह जुड़कर सम्पूर्ण भारतीय समाज के बदलते स्वरूप का विवेचन, विश्लेषण करती जाती है।

दीवान मथरादास ने माड़ी का निर्माण किया और उनके पुत्र मैयादास ने माड़ी का कायाकल्प किया तथा धन, ऐश्वर्य और पद के साथ बड़े दीवान की उपाधि पायी। इस पीढ़ी में खालसा राज्य के मूल्य और आदर्श जीवित रहे। धनपत जो मैयादास के भाई गोकुलदास के रखैल का पुत्र है उसके माड़ी में आगमन से परिवेश विशेष की सृष्टि होती है। उसे लोग सनकी दीवान कहते हैं। ''अब तो वह बूढ़ा हो चला था, पर जब जवान था तभी से उसका नाम कस्बेवालों ने 'सनकी दीवान' डाल रखा था। दीवानों की बिरादरी में यही एक आदमी था जो आज भी पीले रंग का अँगरखा पहनता था, और सिर पर केसरी रंग की पगड़ी, जबकि अँगरखे का चलन कस्बे में अंग्रेजों की अमलदारी कायम होने के साथ खत्म हो गया था और केसरी रंग की पगड़ी केवल ब्याह–शादी के वक्त सिर पर बाँधी जाती थी।[5]''

दीवान धनपत के पुत्र के विवाह की बात चलती हे तो गरीब हरनारायण भी अपनी दोहती रूक्मणी के विवाह के लिए पुरोहित से कहता है दोनों का संवाद ''तुम ही कहीं बात चलाओं, पुरोहित जी, हमारे सिर पर से भी बोझ उतरे।'' ''बोझ तो है ही, दीवान जी, लड़कियाँ सदा महँगी पड़ती है। आप ही का जिगरा है जो इसे अब तक घर में बैठाए हुए हो। रूक्मों बारह–तेरह की तो हो गई होगी?[6]'' दीवान धनपत और दीवान मंसाराम समधी बनने जा रहे थे। बारात को देख मौसी भागसुद्धी कहती है' ''बड़ी देर से बारात ले जा रहे हो, कुंदनलाल। बेटीवालों का पानी उतारने जा रहे हो, क्या?''

पानी उतारने वाली बात ही हुई ना, कुंदनलाल! चालीस बाराती लाने को कहा था, और यहाँ पूरा लश्कर उठा लाए हो! यह पानी उतारना नहीं तो क्या हुआ! बेटियाँ सबकी साँझी होती हैं।[7]''

भोजन के वक्त पापड़ को माध्यम बनाकर झगड़ा होता है क्योंकि ''हमने फैसला किया है कि जब तक तुम्हारी बिरादरी की एक और लड़की हमारे लड़के के साथ ब्याह कर नहीं भेजी जाती तब तक तुम्हारी बेटी माड़ी में नहीं आयेगी। और वहीं से दुल्हन की डोली वापस लौटा दी जाती है। मंसाराम के अपमान से जड़ी थी, हवेली की नीलामी वाली घटना ने आगे बढ़–चढ़कर बोली लगाई थी। असल में धनपत, मन में पड़ी पुरानी गाँठ का बैर ले रहा था।[8]''

दूसरे विवाह के दौरान पुरोहित सायत निकलने और दुल्हन न मिलने के कारण रूक्मणी को पकड़कर मंडप में बिठा देता है और विवाह के मंत्र पढ़ने लगता है। और रूक्मणी कल्ले की दुल्हन बनकर माड़ी में आ जाती है। भीष्म साहनी अपनी आत्मकथा 'आज के अतीत' में पुश्तैनी वतन 'भेरा' की चर्चा करते हैं। वे मैयादास की माड़ी की रचना प्रक्रिया पर कहते हैं ''उसकी मूलकथा मैने अपनी माँ के मुँह से सुनी थी। माँ जब भी किसी पुराने घटना की चर्चा करती तो हमारा पुश्तैनी वतन, 'भेरा' मेरी आँखों के सामने सजीव होकर उभरने लगता। दूर बचपन में मैं पहली बार 'भेरा' में अपनी बहन के विवाह के अवसर पर गया था। उन दिनों 'भेरा' के बाहर बसे हुए लोग ब्याह–शादियों का आयोजन अपने पुश्तैनी कस्बे में ही आकर करते थे।''[9]

सिक्ख राज्य को समाप्त करवाने के लिए अंग्रेजों ने सिक्ख सेना का ही प्रयोग किया। पद और आर्थिक लाभ का लालच देकर सालार से विश्वासघात कराया गया। और सैनिक लड़ते–लड़ते मारे गये। सत्यप्रकाश मिश्र के शब्दों में ''ब्रिटिश अमलदारी के तम्बू फैलाने और अन्य अमलदारियों के सिमटते–सिमटते समाप्त हो जाने की बीजकथा के सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक आदि अनेकमुखी परिणाामों की सांकेतिकता और चित्रात्मकता के कारण इस उपन्यास का राष्ट्रीय चरित्र भी विकसित होता है।10''

कस्बे का जीवन राजनीति से अपरिचित था। यह अपने सामाजिक जीवन जाति–पॉति, धर्म व्यवस्था, पारस्परिक रिश्तों, लोकगीतों, कहानियों से रागदीप्त होता रहता है ''वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और मानवीय स्तरों को इस सम्बन्ध में जिस प्रकार यह उपन्यास अर्थदीप्त करता है जिस प्रकार के चरित्राों या बिम्बों के माध्यम से इतिहास को वर्तमान या जीवित करता है–रचता है, सामन्ती, अर्धसामन्ती और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी के पारस्परिक रिश्तों को प्रस्तुत करता है, वह इसे महत्वपूर्ण बनाता है।[11]''

धनपत मंसाराम, गोविन्दराम और रामजवाया जहॉ ब्रिटिश राज्य में कारोबार करके लाभान्वित होनेवाले लोग हैं वहीं लेखराज अंग्रेजों के चरित्र को, उनकी नीतियों को विश्लेषित करता है।

कस्बे की ऐतिहासिकता का भीष्म साहनी वर्णन करते हैं ''उस प्राचीन नगर की गालियों में एक बार घूम जाने पर वह नगर भुलाए नहीं भूलता। यह मध्ययुगीन नगर था, महमूद गजनवी का नौवाँ आक्रमण इस नगर पर हुआ था–वहॉ पर अभी भी शीशमहल के खंडहर देखने को मिलते हैं और नगर के इर्द–गिर्द ऊँची, लाल पत्थर की दीवार है, जगह–जगह से टूटी हुई, पर उसके मुनारे कहीं–कहीं पर कायम हैं, चौगिर्दी दीवार में पॉच दिशाओं में खुलनेवाले पॉच फाटक–काबुली दरवाजा, लाहौरी दरवाजा आदि।12'' लेखराज को संस्कार दादी मॉ से मिले थे। लखीदास और बंदा बैरागी की कहानी, गुरू महाराज और उसके पॉच भक्त की कहानी को सुननेवाला लेखराज लाम में भर्ती होता है प्रेमिका मोराँ को छोड़कर। देश की सेवा उसके और उस जैसे युवकों के लिए सर्वोपरि है। इसकी रचना–प्रक्रिया पर लेखक लिखते हैं ''भावनात्मक स्तर पर मैं सिक्ख अमलदारी से भी जुड़ता था। दादी माँ के मुँह से गुरूओं की कहानियॉ सुनते हुए लेखराज इतना भावोद्वेलित नहीं होता होगा जितना मैं स्वयं होता था। जब लाहौर दरवाजा से आनेवाला सालार नीले वस्त्रों और सिर पर पीली दस्तार लगाए, घोड़े, पर सवार, कस्बे की गलियों में जा रहा था तो उसके पीछे, मन्त्रमुगध सा उसे देखता हुआ लेखराज नहीं जा रहा था, मैं जा रहा था। इस तरह का तादात्म्य शायद उन्हीं पात्रों के साथ हो पाता है जिन्हें तुमने कहीं दिल से चाहा हो, जिनके प्रति गहरा अनुराग रहा हो। 13''

लेखराज अमलदारियों के चरित्र को विश्लेषित करता हुआ उसके सकारात्मक योगदान की चर्चा करता है। ''एक अमलदारी वह होती है जिसमें मनुष्य की अच्छी भावनाओं को बल मिलता है, प्रोत्साहन मिलता है, दर्दमन्दी को, सेवाभाव को, दिल की उदारता को, सहनशीलता को, एक दूसरे का दर्द बॉटने की भावना को। एक अन्य प्रकार की अमलदारी होती है जिसमें नोच–खसोट, घृणा–द्वेष, धनलोलुपता को बढ़ावा मिलता है। एक में मनुष्य की उदात्त भावनाएँ विकास पाती हैं, जिसमें आपसी सद्भाव बढ़ती है। 14''

दीवान मैयादास अपना सबकुछ सिक्खों की लड़ाई में लाहौर दरबार को कर्ज के रूप में देते हैं। मैयादास कस्बे में हुये परिवर्तन को ग्रहण नहीं कर पाते। लेखक के अनुसार ''कस्बे की गलियों में चलते हुए अब वह छाया से प्रतीत होते थे, किसी बीते गौरव की छाया से। वह न तो वर्तमान के साथ कहीं जुड़ते नजर आते थे, न भविष्य के साथ। उन्हें देखकर लगता जैसे कोई व्यक्ति किसी प्रवाह में से छिटककर बाहर फेंक दिया गया हो, और वह उत्तरोत्तर पीछे छूटता जा रहा हो। हर दिन घटनेवाली नयी–नयी घटनाओं में उनका कहीं कोई स्थान नहीं था।[15]'' नयी व्यवस्था और कानून से अलग मैयादास कुछ दिनों बाद रेलवे गार्ड को ही फिरंगी हाकिम समझकर उसके समक्ष सलाम के लिए झुकते हैं। इसका खुलासा धनपत इन शब्दों में करता है ''ताऊजी, यह फिरंगी हाकिम नहीं है, यह तो रेलगाड़ी का गार्ड है। मैं आपको असली हाकिम के पास ले चलूँगा।[16]'' इस शदमें से दीवान मैयादास चल बसते हैं चोट कहाँ और कैसे लगी यह बिना जाने ही।'' दीवान मैयादास का स्वर्गवास हो गया। दीवान मैयादास चलाणा कर गये।[17]''

देशद्रोही दोनों सालार तेजसिंह और लालसिंह ऊँचा पद प्राप्त करते हैं और लोग उन्हें सही ठहराते हैं'' उस वक्त अंग्रेजों से मिलना ही सही था। यह नीति की बात है। सयाने कहते हैं–सारा जाता देख के आधा दीजै बाँट।18''

कस्बें में नई अमलदारी के प्रवेश से साहुकार व्याज और कर्ज का सिलसिला प्रारम्भ होता है साथ ही कस्बे का अस्तित्व चकनाचूर हो जाता है। अब लोग एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो जाते हैं और रियासत टुकड़ों में बँट जाती है। रमेंश दवे के अनुसार ''मैयादास की माड़ी में पुनः वहीं अंग्रेजी उपनिवेशवाद, हुकूमती सामंतवाद का विस्तार करता हुआ भारतीय मानस पर किस प्रकार छा जाता है, इसकी आंतरिक और देशज वेदना है।''19

अब अंग्रेज तात्कालिक लाभ दिखाकर और अपने वफादारों को पुरस्कृत करने की योजना से लोगों को अपनी ओर करते हैं। धनपत समेत अन्य अवसरवादी लोग अंग्रेजों की शरण में चले जाते हैं। ऐसे में दीवान गोकुलदास का पुत्र लेखराज घर से विमुख हो जाता है।

अंग्रेज अधिकारी माड़ी की नीलामी करते हैं। ''निलामी का ढोल बजाना कस्बेवालों के लिए अपशगुन के समान था, किसी परिवार के उजड़ जाने का सूचक।20'' धनपत माड़ी को खरीदना चाहता है जिसे मालिक मंसाराम 15 हजार की बोली लगाकर खरीद डालते हैं और मलिक मंसाराम के प्रति धनपत के मन की गॉठ यहीं से शुरू होती है। जिसकी परिणति उसके बेटे के विवाह के वक्त देखी जा सकती है।

कस्बे में रेलगाड़ी के प्रवेश से कई तरह की चर्चाएँ शुरू होती हैं। ''जहाँ–जहाँ से रेलगाड़ी गुजरेगी, आसपास की जमीन जलकर राख हो जायेगी। बूढ़ा लखमीदास कहता ''उसके आगे भट्टी जलती है, जो सारा वक्त दहकती आग उगलती रहती है। पेड़–पौधे भस्म नहीं होंगे तो क्या होगा?''21 जबकि रामजवाया रेलगाड़ी की तारीफ में कहता है ''गाड़ी चलती है तो उसके पहिये में से आवाज आती है– छिक्क, चाचा, छुक्क चाचा! खट–खट खटाखट.....खट–खट खटाखट![22]'' एक ओर जहॉ लोग रेलगाड़ी से रागात्मक स्तर पर जुड़ रहे थे वहीं ब्रिटिश सरकार रेल द्वारा ब्रिटेन को मालामाल करने की योजना बनाती है ''कपास और काफी और चाय और गर्म मसाले ये सब बुवाएँगे भी हम, उनके दाम भी हम निर्धारित करेंगे, उन्हें खरीदेंगे भी हम, और वहॉ से निर्यात भी हम करेंगे।[23]'' इस सन्दर्भ में सत्यप्रकाश मिश्र का विचार है ''इस बैठक में मन्त्री महोदय के बरक्स एक अध्यापक को खड़ा करके औपनिवेशिक सत्ता के चरित्र को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर बेनकाब किया गया है जो प्रकारान्तर से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के चरित्र पर भी लागू होता है।''[24] इस प्रकार माड़ी के इतिहास में मानव जीवन के कई प्रकार के परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं जिन्हें वे स्वीकार भी करते जाते हैं। ये बदलाव सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक धरातल पर होते जाते हैं। आशुतोष कुमार इसका विश्लेषण कुछ इस प्रकार करते हैं ''लेखक औपनिवेशीकरण के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आशयों को कस्बे के बदलते हुए जीवन–सन्दर्भों की शक्ल में पेश करता है। 25''

नई अमलदारी में लोगों के पास न तो खालसा दरबार की कीमत रही और न ही लेखराज की। शीशमहल अब कबूतरों, चमगादड़ों और मनचले लड़कों के खेल का साधन बन गया। कस्बे के बाहर मंडुवें में लोगों को जुआ, सिगरेट और औरत की लत लगायी जाने लगी। वानप्रस्थी जी के लड़कियों के स्कूल खोले जाने का विरोध होता है किन्तु लेखराज और मौसी भगसुद्धी के प्रयास से वे स्कूल खोल पाते हैं। यहॉ रूक्मणी कल्ले की सहायता से पढ़ने आती हैं दोनों माड़ी का त्याग कर एक दूसरे में गुँथकर जीवन पथ पर आगे बढ़ते हैं क्योंकि 'इंसान का शरीर भूखा नहीं होता, भूखी तो उसकी आत्मा होती है।[26]'' जमीन–जायदाद में हिस्सा के भय से धनपत लेखराज के विरूद्ध बयान दर्ज कर जाता है ''साहिब बहादुर, यह लेखराज वह आदमी है जो सरकार ईगलिशिया के खिलाफ लड़ता रहा है। जिस वक्त अपना खादिम, जंग के दिनों में फिरंगी फौजों को रसद पहुँचा रहा था, उस वक्त यह आदमी सिक्ख में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहा था.....और अब कस्बे में लौटकर बदअमनी फैला रहा है।[27]''

धनपत के अस्वस्थ होते ही माड़ी में अनाचार फैलने लगता है। पुष्पा धनपत की ऑखों के सामने से सारे गहने, जवाहरात और जरूरी कागजात निकालकर पिता का बदला लेती है। धनपत की मृत्यु के बाद कस्बे का नक्शा ही बदल जाता है। अब रेलगाड़ी रोज आने लगती है सरकारी दफ्तर खुलते है और अफ्सरों की कोठियाँ और पक्की सड़कें बनती हैं। हिम्मतराय धनपत का छोटा बेटा बैरिस्टर बनकर विदेश से लौटते ही मँझले को माड़ी से निकाल बाहर करता है वह माड़ी को इंग्लिशतान बनाकर रहने लगता हैं। 'रायबहादुर' बनने के लिए वह अंग्रेजों की खुशायद करता है। सत्यप्रकाश मिश्र के अनुसार ''भीष्म जी ने उपन्यास में धनलोलुपता का अत्यन्त सधा हुआ चित्रण किया है। उसका बेटा हिम्मतराय कस्बे में सत्याग्रहियों पर गोली चलवाता है और अन्ततः तिलकराज द्वारा चुनौती दिये जाने पर घबराता है, डरता है वैसे ही जैसे धनपत।[28]''

रूक्मणी और कल्ले का जीवन उपन्यास के मार्मिक प्रसंगों में उभरकर आता है। शारीरिक स्तर पर दोनों असमान होने के बाद भी आत्मा के स्तर पर एक दूसरे के निकट थे। रूक्मणी स्कूल की बड़ी उस्तानी बन चुकी थी और कल्ला उसकी सुरक्षा में तैनात रहता। रूक्मणी कल्ले को लाहौर के अस्पताल में भर्ती करवाकर स्वयं अमरनाथ की यात्रा पर

निकलती है जहॉ कल्ले की याद में खड्डे में गिरकर मारी जाती है। कल्ला अस्पताल से ठीक होकर कस्बे में लौटता है और रूक्मणी को न पाकर फिर से पागल हो जाता है।

''रूक्मण झूठी ए
सौंह गुरॉ दी आखॉ
रूक्मण झूठी ए।[29]''

स्वतंत्रता आन्दोलन की लहर अब कस्बे तक पहुॅच चुकी है और एक बार फिर लोग फिरंगियों के प्रति आवाज उठाने लगे।

''असॉ ते साइयॉ, साडा करम कमा दे,
साडा गुलामी कोलों देस छुड़ा दे।''30

मैयादास की माड़ी पर विवेक द्विवेदी का वक्तव्य है लेकिन 'मैयादास की माड़ी एक सामाजिक दस्तावेज ही नहीं, यह नाटकीय उतार–चढ़ाव के साथ अनेक चरित्रों के घात–प्रतिघात की मानवीय कथा है। ''31

इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने कथानक के व्यापक फलक पर पीढ़ी दर पीढ़ी हो रहे परिवर्तन को अपनी प्रगतिशील दष्टिकोंण से संवारा है। भौतिक स्थितियों में बदलाव से किस प्रकार मानव व्यवहार परिवर्तित होता है। लेखक इसकी व्यंजना रचनात्मक संवेदना से करते हैं वे निरर्थक पड़ते हुए जीवन मूल्यों के साथ मानव समाज की वास्तविकताओं का भी उद्घाटन करते जाते हैं। उनके नवीन और पुरातन के बीच चलनेवाले शाश्वत द्वन्द्व के प्रसंग उपन्यास को और भी विस्तृत करते हैं। उपन्यास के अन्त में आये देशव्यापी स्वतंत्रता आन्दोलन नवजागरण–कालीन भारतीय समाज से इसे जोड़ता है।

उपसंहार–

भीष्म साहनी द्वारा रचित कस्बई जीवन पर आधारित ''मैयादास की माड़ी'' उपन्यास मानव–संग्राम को रेखांकित करता है। पंजाब के 'भेरा' कस्बे को आधार बनाकर लिखे गये इस उपन्यास में नये और पुराने के बीच संघर्ष को विभिन्न पात्र एवं घटनायें चित्रित करते हैं। माड़ी की ऐतिहासिकता से लेकर उसके टूटने तक के विविध प्रंसंग आये हैं। दीवान मयरादास, मैयादास, गोकुलदास, लेखराज, धनपत माड़ी के उत्तराधिकारी के रूप में आते हैं। सिक्ख अमलदारी को अंग्रेज अपनी नीतियों से ध्वस्त कर डालते हैं वे कस्बे को अपने अधीन कर अपना राजत्व शुरू करते हैं। कस्बे की मान्यतायें, रीति–रिवाज, रहन–सहन किस प्रकार बदलता है लेखक इसकी जॉच–पड़ताल करते जाते हैं। धीरे–धीरे कस्बे का परिवेश पूरी तरह बदल जाता है। रेल के आगमन, पक्की सड़के, सरकारी दफ्तर माड़ी का कायाकल्प करते हैं। विलायती सामान, कपड़े, सिगरेट, जुआ और औरत का चलन अब दिखाई देने लगता है। लड़कियों के लिए झीनी चुन्नी और किलिप मँगवाये जाते है। वानप्रस्थी जी, लेखराज और मौसी भगसुद्धी के प्रयत्न से विद्यालय खुलता है जिसमें पढ़कर रूक्मणी फिर उस विद्यालय की उस्तानी बनती है। रूक्मणी और कल्ले का प्रेम उपन्यास को एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग प्रदान करता है। सिक्ख–अमलदारी के उखड़ने और ब्रिटिश–शासन के फैलने की कथा द्वारा लेखक ने सम्पूर्ण जनजीवन को परत दर परत उधाड़कर रख दिया है। उपन्यास के अन्त में आये देशव्यापी स्वतंत्रता आन्दोलन इसे और सुदृढ़ करता है। देश प्रेम की भावना अब कस्बे में प्रवेश कर चुकी है एक बार फिर कस्बेवासी फिरंगियों के खिलाफ एकजुट होकर पुकारने लगते हैं–साडा गुलामी कोलों देस छुड़ा दे। इन विविध प्रसंगों द्वारा लेखक इस उपन्यास में सृजनात्मक हो उठे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1. *बाबर डॉ0 सुरेश, 'भीष्म साहनी के साहित्य का 'अनुशीलन,' अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, 1997 पृ0 43*
2. *नामवर सिंह ''आलोचना त्रैमासिक : अंक 17–18, वर्ष 2004 राजकमल प्रकाशन ,नयी दिल्ली, पृ0 115*
3. *वही पृ0 54*
4. *पटेल डॉ0 कृष्णा, कथाकार भीष्म साहनी, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर 2009 पृ0 60*
5. *साहनी भीष्म 'मैयादस की माड़ी' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2000 पृ0 9–10*
6. *वही, पृ0 23*
7. *वही, पृ0 31*
8. *पटेल डॉ0 कृष्णा, कथाकार भीष्म साहनी, चिन्तन प्रकाशन, कानपुर, 2009, पृ0 62*
9. *साहनी भीष्म 'आज के अतीत' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृ0 241*
10. *सं0 नामवर सिंह ''आलोचना त्रैमासिक' अंक 17–18 वर्ष 2004, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 116*
11. *वही, पृ0 116*
12. *साहनी भीष्म, आज के अतीत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 पृ0 241*
13. *वही, पृ0 242*
14. *साहनी भीष्म, 'मैयादास की माड़ी,' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृ0 228*
15. *साहनी भीष्म 'मैयादास की माड़ी' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000 पृ0 144*
16. *वही, पृ0 182*
17. *वही, पृ0 183*
18. *वही, पृ0 144,–45*
19. *सं0 नामवर सिंह ''आलोचना, त्रैमासिक अंक 17–18 वर्ष 2004, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 84*
20. *साहनी भीष्म, मैयादास की माड़ी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2000 पृ0 187*
21. *वही, पृ0 175*
22. *वही, पृ0 176*
23. *वही, पृ0 199*
24. *सं0 नामवर सिंह ''आलोचना त्रैमासिक अंक 17–18 वर्ष 2004, राजकमल पृ0 नई दिल्ली, पृ0 117*
25. *वही, पृ0 66*
26. *साहनी भीष्म, मैयादास की माड़ी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृ0 299*
27. *वही, पृ0 285*
28. *सं0 नामवर सिंह 'आलोचना त्रैमासिक अंक 17–18 वर्ष 2004, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 117*
29. *साहनी भीष्म, ''मैयादास की माड़ी'' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2000, पृ0 325*
30. *वही, पृ0 334*
31. *द्विवेदी विवेक, ''भीष्म साहनी, उपन्यास साहित्य'', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 1998 पृ0 126*